Q. भारत में ताम्रपाषाण कालीन संस्कृतियों की विशेषता पर प्रकाश डालें?

1. ताम्रपाषाण कालीन संस्कृति के लोग स्थाई रूप से रहना प्रारंभ कर दिए थे।

2. इस समय के लोग कच्चे ईंटों के घर बनाकर रहना प्रारंभ कर दिए थे। इसका साक्ष्य राजस्थान में बागोर और अहार नामक स्थान पर उत्खनन से प्राप्त होता है।

3. ताम्रपाषाण कालीन लोग कच्चा मांस खाना बंद कर दिया था मांस को पकाकर खाने लगे महाराष्ट्र के इनामगाँव से मिट्टी के चुल्हा बनाने का साक्ष्य मिला है।

(4) ताम्रपाषाण कालीन लोग पत्थर के औजार के साथ-साथ ताँबा धातु के औजार का प्रयोग करने लगे।

(5) ताम्रपाषाण कालीन लोग मिट्टी के सुंदर-सुंदर बर्तन बनाना जानते थे।

(6) ताम्रपाषाण कालीन लोग अपना जीवन यापन कृषि एवं पशुपालन करके करते थे।

(7) ताम्रपाषाण काल के लोग भी प्राकृतिक देवी-देवता की पूजा करते थे।

(8) ताम्रपाषाण कालीन में लोगों मृत्यु के पश्चात उत्तर-दक्षिण दिशा में लेटाकर मिट्टी में दफनाना शुरुआत कर दी थी।

Q2. ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति का अर्थ बताइए?

उत्तर — वैसा समय जब लोग ताँबा और पत्थर दोनों का उपयोग अपने दैनिक-जीवन करते थे उन्हें ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति कहते है।

भारतीय इतिहास में 5000 ई॰पू॰ में ऐसा संस्कृति थी जब लोग ताँबा और पत्थर दोनों का उपयोग करते थे। भारत में अनेक जगहों खुदाई करने से इसका साक्ष्य मिले है। जैसे बिहार के चिरांद, नरहन, कोण्डीलवा, राजस्थान, मध्यप्रदेश, दक्षिण भारत, महाराष्ट्र आदि स्थानों से मिले है।